Geography

(11)

"इसने सम्प्रदाय के नेताओं को लोगों का पूर्ण प्रतिनिधि बना दिया। न्याय पंचायत प्रणाली स्थापित की गई। तब से कोई भी मुकदमा पुलिस को नहीं दिया जाता। 22 लाख रुपए की लागत से एक विद्यालय की इमारत का निर्माण केवल गाँव के संसाधनों के उपयोग से किया गया। इसके लिए कोई भी दान नहीं लिया गया। आवश्यकता पड़ने पर धन को कर्ज लेकर बाद में वापस कर दिया गया। गाँव वालों को इस आत्मनिर्भरता पर गर्व महसूस हुआ। गाँव की अनुप्रेरणा से श्रम की हिस्सेदारी की एक नई प्रणाली का विकास हुआ। लोग कृषि कार्य में स्वेच्छा से एक-दूसरे की मदद करने लगे। भूमिहीन श्रमिकों को रोजगार मिल गया। आजकल ग्राम अपने समीपवर्ती ग्रामों में उनके लिए भूमि खरीदने की योजना बनाते हैं। वर्तमान में जल पर्याप्त मात्रा में है, खेती फल-फूल रही है, यद्यपि उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग अत्यधिक हो रहा है, नेता के बाद कार्य जारी रखने की योग्यता के संबंध में प्रश्न उठता है। उनके शब्दों में इसका उत्तर मिलता है, "रालेगन के विकास

Geography

(9)

(5) रालेगॉन सिद्धि, अहमदनगर, महाराष्ट्र में जल-संभर विकास : को विस्तारित करें ?

उ० ⇒ महाराष्ट्र में अहमदनगर जिले में रालेगॉन सिद्धि एक छोटा-सा गाँव है। यह पूरे देश में जल-संभर विकास का एक उदाहरण है। 1975 में, यह गाँव गरीबी और शराब के गैर-कानूनी व्यापार जाल में जकड़ा हुआ था। उस समय गाँव में परिवर्तन आया। जब सेना का एक सेवानिवृत्त कर्मचारी उस गाँव में बस गया और जल-संभर विकास का कार्य आरंभ किया। उसने गाँव वालों को परिवार नियोजन और ऐच्छिक श्रम, खुली चराई, वृक्षों की कटाई रोकने और मद्य निषेध के लिए तैयार किया।

ऐच्छिक श्रम आर्थिक सहायता के लिए सरकार पर कम से कम निर्भर रहने के लिए आवश्यक था। उस व्यक्ति के कथानुसार, "इसने परियोजनाओं की लागत का समाजीकरण कर दिया।" जो व्यक्ति गाँव के बाहर काम कर रहे थे, उन्होंने भी प्रति वर्ष एक महीने का वेतन देकर विकास में सहयोग दिया।

गाँव में अंतःस्त्रावी तालाब के निर्माण के साथ कार्य शुरू हुआ। 1975 ई० में तालाब में पानी नहीं रुक सका। तटबंध की दीवारें रिस रही थी। तटबंध को स्वैच्छिक रूप से मरम्मत करने के लिए लोगों को एकत्र किया गया। लोगों को याद में पहली बार गर्मी में इसके नीचे सात कुओं में जल भर गया। लोगों ने अपने नेता और उसके विचारों में अपना विश्वास दिखाया। नौजवानों का एक समूह बनाया गया जिसे तरुण मंडल कहा गया। समूह ने दहेज प्रथा, जातिवाद और छुआछूत पर प्रतिबंध लगाने का काम किया। शराब आसवन इकाई खत्म कर दी गई और मद्य निषेध लागू कर दिया गया। खान पर चारा देने पर जोर देकर खुली चराई पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया। गहन जल फसल जैसे — गन्ने की खेती पर प्रतिबंध लगा दिया गया। कम पानी की आवश्यकता वाली फसलों जैसे — दालें, तिलहन और कुछ नगदी फसलों को प्रोत्साहित किया गया।

छ- स्थानीय संस्थाओं के सारे चुनाव सर्वसम्मति के आधार पर शुरू कर दि

की प्रक्रिया एक आदर्श गाँव बनने तक नहीं रुकेगी।" बहते समय के साथ लोग विकास के नए सूत्रों की ओर अग्रसर है। भविष्य में वे नेगॉन देश का एक अलग मॉडल प्रस्तुत कर सकता है।

Scanned with CamScanner

Geography

(8)

जल संसाधन के स्रोत दो प्रकार के हैं-

1) धरातलीय जल संसाधन — देश में नदियों, झीलों, तालाबों, जलाशयों के रूप में मिलने वाला जल धरातलीय जल कहलाता है डॉ. के. एल. राव के अनुसार भारत में नदियों का अनुमानित औसत वार्षिक प्रवाह 1869 अरब घन मीटर है परंन्तु स्थलाकृतिक बाधाओं

Scanned with CamScanner

करना।

3. सड़कों पर जल फैलाव को रोकना,
4. भौम जल में वृद्धि करना तथा जलस्तर को ऊँचा उठाना।
5. भौम जल प्रदूषण को रोकना।
6. भौम जल की गुणवत्ता को सुधारना
7. मृदा अपरदन को कम करना।
8. ग्रीष्म ऋतु और सूखे के समय जल की घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करना।

ऐसी अनेक कम लागत वाली तकनीकें उपलब्ध हैं, जो भौम जल के भंडारों के पुनर्भरण में सहायता कर सकती हैं। कुछ महत्वपूर्ण तकनीकें: जैसे – छत के वर्षा जल का संग्रहण, सूखे हुए कुओं का पुनर्भरण, हैंड पंपों का पुनर्भरण, रिसाव गड्ढों का निर्माण, खेतों के चारों ओर खाइयाँ और छोटी - छोटी सरिताओं पर बाँधिकाएँ और रोक बाँध बनाना विशेष उल्लेखनीय है। इसमें से कुछ तकनीकों को

2) भारत में जल कहाँ - कहाँ से प्राप्त होता है

ans-> जल के स्रोत – भारत में पर्याप्त मात्रा में जल संसाधन उपलब्ध है। देश में धरातलीय जल और पुनः पूर्ति योग भौम जल की वार्षिक उपलब्धता लगभग 1869 अरब घन मीटर है। देश में उपयोगी जल संसाधन 1123 अरब घनमीटर है, जिसमें से 690 अरब घन मीटर धरातलीय जल और 433 अरब घन मीटर पुनर्भरणीय भौम जल संसाधन है देश के